ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

# आश्वस्त

वर्ष 26, अंक 243 जनवरी 2024

## गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 26 अंक 243
जनवरी 2024

# आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
**डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी**

संरक्षक
**सेवाराम खाण्डेगर**
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
**आयु. सूरज डामोर IAS**
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
**डॉ. तारा परमार**
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
**डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली**
**डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात**
**डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात**
**डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.**

Peer Review Committee
**डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)**
**प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)**
**प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)**
**डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)**

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

## अनुक्रमणिका



| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1 | अपनी बात | डॉ. तारा परमार | 3 |
| 2 | छत्तीसगढ़ के कमार जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का भौगोलिक अध्ययन | राजू चन्द्राकर शोधार्थी | 4 |
| 3 | 'परिवर्तन की बात' कहानी में व्यक्त दलित चेतना | डॉ. संजय एल. बंधिया | 6 |
| 4 | The Role and Importance of Artificial Intelligence in Information Technology : A Comprehensive Analysis | Dr. Harjinder Kaur | 9 |
| 5 | Inclusive Sports for Persons with Disabilities : Myth or Reality | Dr. Mona Goel<br>Charu Chadha | 15 |
| 6 | Ensuring Values for Coexistential Living Issues and Challenges | Dr. Shyam Sundar<br>Dr. Saroj Malik | 20 |
| 7 | फूले समाज की पत्र-पत्रिका एवं स्मारिकाएँ | डॉ. रुपचंद गौतम | 25 |



UGC Care Listed Journal
खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

| | | |
|---|---|---|
| एक प्रति का मूल्य | : | रुपये 20/- |
| वार्षिक सदस्यता शुल्क | : | रुपये 200/- |
| आजीवन सदस्यता शुल्क | : | रुपये 2,000/- |
| संरक्षक सदस्यता शुल्क | : | रुपये 20,000/- |

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

# अपनी बात

**''संविधान** का उद्देश्य राज्य के अंगों (विधान मण्डल, कार्यपालिका और न्यायपालिका) का निर्माण ही नहीं है वरन् उनके अधिकार को सीमित करना भी है। नहीं तो पूर्ण दमन का खतरा पैदा हो सकता है। सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हर परिस्थिति में संविधानिक रीतियों को मजबूती से अपनाना होगा। हमें सिर्फ राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। हमें सामाजिक लोकतंत्र का रूप भी देखना चाहिए, और यह स्वातंत्र्य, समता और बंधुता के सिद्धांत पर चलना है।''

– डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

देश आज प्रगति के पथ पर अग्रसर है, विकासशील राष्ट्र से विकसित राष्ट्र की श्रेणी में अपना स्थान बना रहा है और अंतरिक्ष में अपने झण्डे गाड़ रहा है। आये दिन प्रिंट मीडिया और सोशल मीडिया में दिखाई देने वाले विज्ञापनों को देखकर प्रसन्नता होती है लेकिन धरातल की वास्तविकता कुछ और ही बयां करती है। शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, बालिका एवं महिला सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, कुपोषण आज भी चुनौती बनी हुई है। आंकड़ों में सब कुछ हरा दर्शाना दृष्टिभ्रम ही कहा जाएगा। बेरोजगारी की दर अधिक बनी रहना एक बड़े आर्थिक खतरे का संकेत है।

व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के लिये अर्थ ही रीढ़ है। लेकिन जब ऐसा समाज और देश के सम्प्रेषण और संबंध पर ही ग्रहण लगने लगे तो चिंता की बात है। विकास के तमाम दावों के बावजूद नागरिक अपने को उपेक्षित अनुभव करता है। शासन में बैठे लोगों को तो इसका चिंतन–मंथन करना चाहिए, लेकिन साथ ही 'गण' की जिम्मेदारी अधिक बनती है, 'तंत्र' के पहले 'गण' को भी विचार करना होगा कि क्या वह अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ठीक से कर रहा है? सरकार, राजनीतिक दलों और नागरिकों को संसाधनों का उपयोग अधिकाधिक देशहित में करने की आदत डालनी होगी।

भारत में संसदीय प्रणाली के चलते यदि परिपक्व परम्पराएं और प्रजातंत्रीय मूल्यों के प्रति आस्थाएं स्थापित नहीं हो पाई तो इसका कारण खोजना होगा। देश की राजनीति से समाज सेवा का भाव लुप्त होने का परिणाम है चुनावों पर जातिवाद हावी होना, उसके आगे सब बौने साबित हो रहे हैं। इसलिये हमें ऐसी प्रविधियों के विषय में सोचना होगा जो जनता को मजबूत करे पूरा भारत हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों, इसाइयों, ठाकुरों, जाटों, दलितों, आदिवासियों, लोधियों, यादवों जैसे वर्गों में विभाजित हो गया है, मात्र इसलिये कि एक वर्ग का दूसरे पर विश्वास नहीं है?

एक समय था जब तथाकथित सवर्ण हिन्दू जातियों के महानायकों ने जातिप्रथा के कलंक से समाज को मुक्त कराने के प्रयास किये। महामना मदन मोहन मालवीय, वीर सावरकर, बाला साहब देवरस जैसे लोग ब्राह्मण ही थे लेकिन वे अनुसूचित जातियों के प्रति समता का व्यवहार चाहते थे। सभी राजनीतिक दलों में हिन्दू हैं। अतः यह आशा की जा सकती है कि हिन्दू समाज के भविष्य के लिये वे सब राजनीतिक लाभ–हानि से उपर उठकर एकजुटता के साथ अनुसूचित जातियों–दलितों पर हो रहे अन्याय–अत्याचार को समाप्त करने के लिये आगे आकर सम्मिलित पहल करेंगे और जिस देश ने ''वसुधैव कुटुम्बकम'' का संदेश विश्व को दिया उसे अपने ही देश में सार्थक करेंगे। इस प्रकार हम आनेवाली पीढ़ी को **खुशहाल और सुरक्षित भारत** दे सकेंगे। इतना हमें करना है। डॉ. स्वामी श्यामानन्द सरस्वती ने अपनी रूबाई में व्यक्त किया है –

'सब एक के बेटे हैं सुनिश्चित जानें
हर एक को उठाना है हृदय में ठानें
कर्तव्य सवर्णों का यही बनता है
जितने हैं दलित उनको ये भाई मानें।

हर मन से घृणा द्वेष भगाना होगा
जो सुप्त है वह प्रेम जगाना होगा
निर्माण जो करना है नए भारत का
छाती से दलित वर्ग को लगाना होगा।।

जय भीम, जय भारत, जय संविधान।

**– डॉ. तारा परमार**

# छत्तीसगढ़ के कमार जनजाति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का भौगोलिक अध्ययन

– राजू चन्द्राकर (शोधार्थी )

**शोध सार** –

छत्तीसगढ़ में कमार जनजाति शासन द्वारा घोषित एक विशेष पिछड़ी जनजाति है। यह गोंड़ जनजाति की उपजाति है। इस जनजाति का निवास जंगलों में होता है। यह जनजाति अत्यंत गरीब, पिछड़ी और मुख्यधारा से विमुख है। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद, धमतरी एवं महासमुंद जिले में इनका निवास है। आधुनिक युग में कमार जनजाति पारंपरिक एवं रूढ़ मान्यताओं के साथ आज भी विकास से कोसों दूर है। अत्यंत सीमित आवश्यकता एवं संसाधनों के साथ कमार जनजाति के लोग आज भी बीहड जंगल, पहाड़ों की ओट में, नदियों के समीप स्वयं को अनुकूलित कर जीवनयापन करते है। इसी कारण इस जनजाति में सदियों के बाद भी विकासात्मक परिवर्तन देखने को नहीं मिला है।

**शब्द कुंजी**–जनजाति, कबीला, उत्पत्ति, विकास, गरीब, पीतर कुरिया, दहिया, शिकार।

**प्रस्तावना**–

संवैधानिक व्यवस्था के तहत भारत सरकार द्वारा देश के जनजातीय समुदायों के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास के लिए प्रयास किया जाता है। छत्तीसगढ़ के 42 जनजातीय समुदाय एवं उनकी 170 से अधिक उपजातियां जनजाति के रूप में चिन्हित हैं। छत्तीसगढ़ में ऐसी पांच जनजातियां हैं जिन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा संरक्षित किया गया है। कमार जनजाति इन्ही विशेष पिछड़ी जनजाति में से एक है।

**पूर्व अध्ययन की समीक्षा** –

1. श्रीवास्तव 1990 ने जनगणना रिपोर्ट के आधार पर शोध पत्र सोशियो इकोनामिक एंड डैमोग्राफिक प्रोफाइल ऑफ द कमार ट्राइब ऑफ एम. पी. प्रकाशित किया ।

2. कुमार जितेंद्र 2013 छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में जनजाति का अध्ययन किया जिसमें बताया कि कमार जनजाति पर अन्य जनजातियों व संस्कृति का प्रभाव पड़ता जा रहा है। बाह्य भौतिक व अभौतिक संस्कृति से यह जनजाति समाज प्रभावित हो रहा है जिससे विकास की ओर धीरे–धीरे बढ़ रहा है।

3. कुर्रे एवं प्रधान 2014 में गरियाबंद जिले में कमार जनजाति के विकास पर शासकीय योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना था। उनके अनुसार यह जनजाति निम्न शिक्षा स्तर के कारण विकास के स्तर पर भी निम्न है।

**अध्ययन के उद्देश्य**–

1. कमार जनजाति की समाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में करना।

2. विकास की वर्तमान स्थितियों से पिछड़ने के कारण का अध्ययन करना।

3. यथासंभव निदान के उपाय सुझाना ।

**शोध प्रविधि** –

इस अध्ययन में कमार परिवार के मुखिया से साक्षात्कार किया गया है। प्राथमिक आंकड़े निरीक्षण, साक्षात्कार आदि से संकलित हैं। द्वितीयक आंकड़े प्रकाशित पुस्तकें, पूर्व शोध अध्ययन, पत्र–पत्रिकाएं आदि से जिए गए हैं।

**कमार जनजाति की उत्पत्ति**–

मान्यता है कि गरियाबंद जिले के मैनपुर विकासखंड के देवडोंगर पहाड़ी में हुई है। उनके ईष्टदेव को वामन देवता कहा जाता है जो कि महादेव के ही रूप हैं। यह देवस्थल आज भी मौजूद है। कमारों के पूर्वज जंगलों एवं पहाड़ों में निवास करते थे जो पहाड़िया कहलाते थे। महादेव मनुष्यों को जब दान दे रहे थे तब कमारों के आदि पुरूष को तीर–धनुष सौंप कर इसी से जीवनयापन करने का आशीर्वाद दिया। तब

से कमार जनजाति के लोग शिकार करते हैं, ऐसी मान्यता है।

**कमार जनजाति का संकेंद्रण एवं निवास–**

कमार जनजाति छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले के छुरा तथा मैनपुर विकासखण्ड में, धमतरी जिले के नगरी तथा मगरलोड विकासखंड में तथा महासमुंद जिले के महासमुंद व बागबाहरा विकासखंडों की बस्तियों एवं मजरों–टोलों में निवास करती है। जनगणना 2011 के अनुसार प्रदेश में कमार जनजाति की जनसंख्या 26530 है, जिसमें 13,070 पुरुष तथा 13460 महिलाएं हैं, जिनका लिगानुपात 1030 है। उनमें साक्षरता की दर 38.79% है।

**कमार जनजाति का आवास–**

इस जनजाति के लोग अपना मकान मिट्टी, घास–फूस एवं खपरैल से बनाते हैं। घर के दरवाजे आम की लकड़ी या सेन्हा की लकड़ी से बनाते हैं। घरों में कमरों की संख्या एक या दो ही होती है। उनके निवास स्थान को कमारपारा, कमारडीह तथा कमारटोला आदि नामों से जानते हैं। घर में पीतर कुरिया भी होता है। माई घर में पूर्वजों के साथ अन्य देवताओं की पूजा होती है। कमार एक शिकारप्रिय जनजाति है। अतः सभी के घरों में तीर धनुष व जाल पाया जाता है।

**कमार जनजाति की सामाजिक स्थिति–**

कमार विशेष पिछड़ी जनजाति की दो महत्वपूर्ण उपजातियां हैं–बुंदरजीवा एवं पहाड़िया। मैदानी क्षेत्र में निवास करने वाले "बुंदरजीवा'' कहलाते हैं तथा जंगलों में रहने वाले पहारिया कमार कहलाते हैं। इनके अनेक गोत्र नामों यथा नेताम, मरकाम, मरई, सोढ़ी, जगत, कुंजाम, छेदईहा, धनुधारी, फूलझरिया, ठाकुरिया पहारिया, मंडावी, पड़ोती, नाग, कौड़ो आदि होते हैं जो रक्त संबंध एवं वैवाहिक संबंधों के निर्धारण का आधार है। सगोत्र विवाह निषेध है। परिवारिक संरचना प्रायः केन्द्रीय है जिसमें पति–पत्नी एवं उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं। विवाहित पुत्र पिता के आवास के समीप अपना आवास बनाता है। पितृसत्तात्मक परिवार में संपत्ति का हस्तांतरण पिता से पुत्र की ओर होता है। महिलाओं को परिवारिक निर्णयों एवं आर्थिक स्वतंत्रता है। जाति प्रमुख पटेल या गौटिया वृद्ध एवं जानकार व्यक्ति होता है।

**कमार जनजाति की आर्थिक गतिविधियां एवं स्थिति–**

कमार जनजाति का जीवन वनों पर निर्भर है। पूर्व में यह समुदाय स्थानांतरित कृषि करते थे, जिसे ''बेवार खेती'' या ''दहिया खेती" कहा जाता है। इसमें धान, मड़िया, कोसरा, उड़द आदि उगाया जाता था। वर्तमान में कमार जनजाति आदिम तरीके से स्थायी कृषि करते हैं। फसल कटाई के पूर्व वन देवता एवं धरती माता को धान की बाली अर्पित करते हैं। काटे गए धान को दौरी या बेलन से मिंजाई करते हैं। मिंजाई के पूर्व ठाकुर देव व अपने पूर्वज को नई फसल हेतु धन्यवाद स्वरूप नारियल, मुर्गा, मुर्गी या सुअर आदि की "पुजई'' (बली) देते हैं। कृषि के अलावा परंपरागत व्यवसाय बांस–बर्तन निर्माण पर जीविकोपार्जन हेतु निर्भर है। अधिकांश कमार परिवार बांस–बर्तन निर्माण कला में पारंपरिक रूप से दक्ष होते हैं। कमारों के द्वारा बांस से झौंहा, टोकरी, सूपा, चाप (चटाई) तथा विवाह में उपयोगी बांस का पंखा, झांपी, पर्रा तथा मौर इत्यादि बनाया जाता है। महिलाएं साप्ताहिक हाट बाजारों में अपने उत्पाद का विक्रय करती हैं तथा प्राप्त रुपयों से दैनिक उपभोग की वस्तुएं एवं साग–भाजी खरीदती हैं। कमार जनजाति का आर्थिक जीवन वन आधारित अर्थव्यवस्था पर निर्भर है।

वनोपज संकलन में महुआ, टोरी, तेंदूपत्ता, साल बीज, कोसम बीज, चार– चिरौंजी, गोंद, हर्रा बेहडा, आंवला, आदि संग्रह करते हैं, जो उनके उपभोग एवं अर्थोपार्जन के काम आता है। उनकी अर्थव्यवस्था में महुआ, तेंदूपत्ता एव साल बीज के संग्रह एवं विक्रय का

भी योगदान है। वनोपज संग्रह में स्त्री एवं बच्चों की भूमिका विशेष होती है। अप्रैल–मई माह में कमार महिलाएं जंगलों में तेंदूपत्ता तोड़ने निकलती है। साग–भाजी के रूप में आम, जामुन, तेंदूफल, कांदा, पीतकांदा, करू कांदा, करील, कोलियारी भाजी, चरोटा भाजी आदि का उपयोग करते हैं। कुछ घरों में गाय, बैल केवल कृषि उद्देश्य हेतु तथा बकरी, सुअर मुर्गी आदि को स्वयं उपभोग, विक्रय एवं सामाजिक धार्मिक क्रियाकलापों में 'पुजई' आदि उद्देश्य से पाला जाता है।

पूर्व में कमार लोग दहिया कृषि के साथ–साथ छोटे जंगली जीवों का शिकार करते थे किंतु अब छोटे पक्षियों आदि का शिकार मनोरंजन के लिए करते हैं। चूंकि इनकी बसाहट नदी–नालों के समीप होती है इसलिए मत्स्याखेट में विशेष रुचि रखते हैं । समुदाय के पुरुष एवं बच्चे समूह बनाकर विशेष तिथि को जंगल देव की पूजा कर सामूहिक शिकार के लिए जाते हैं। शिकार को जंगल में ही बराबर मात्रा में आपस में बांट लेते हैं या सामूहिक भोज रखते हैं। सामाजिक व्यवस्था के लिए जाति पंचायत बैठक होती है जिसमें सभी कमार लोग शामिल होते हैं । समस्याओं का निपटारा इसी पंचायत में करते हैं । विवाह घर के बुजुर्गों की देखरेख में संपन्न होते हैं। कमार जनजाति में विधवा विवाह व पुनर्विवाह प्रचलित है

**निष्कर्ष**

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में कमार जनजाति के विकास में कमार प्रकोष्ठ का गठन व कमार जनजाति के कल्याण व उसके जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए यह प्रकोष्ठ का गठन किया गया है । क्योंकि यह जनजाति अन्य जनजाति की अपेक्षा अधिक पिछड़े हुए हैं। प्रकोष्ठ का गठन होने के बाद इस जनजाति को विभिन्न प्रकार की सुविधा मिल रही है। लेकिन यह सुविधा भी पर्याप्त नहीं है। इसके विकास के लिए रोजगार मूलक और जीविकोपार्जन से संबंधित व कौशल विकास केंद्रित प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है तमाम कोशिशों के बाद भी जनजाति समाज अशिक्षा, ऋण ग्रस्तता, शोषण तथा निर्धनता जैसी सामाजिक समस्याओं से ग्रसित है। ऐसे में कमार जनजाति की वर्तमान स्थिति एवं समस्याओं का अध्ययन और भी

**सुझाव–**

- योजना निर्माण एवं क्रियान्वयन, मूल्यांकन, गुणवत्ता तथा पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि एवं स्वरोजगार की सुविधाओं को बढ़ाना चाहिए ।
- धर्म परिवर्तन से बचाव पर ध्यान देने की आवश्यकता ।
- विचारों और मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाया जाय तथा शिक्षा व्यावहारिक एवं कृषि, दस्तकारी, कृषि उपकरणों के निर्माण तथा हस्तशिल्प से संबंधित होनी चाहिए ।
- स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए सचल चिकित्सालयों की व्यवस्था होनी चाहिए।

**– राजू चन्द्राकर (शोधार्थी)**
देव संस्कृति विश्वविद्यालय सांकराकुम्हारी,
दुर्ग (छत्तीसगढ़) भारत

**संदर्भ :**

1. उपाध्याय, डा. विजय शंकर एवं विजय प्रकाश भारत में जनजातीय संस्कृति, मध्य प्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. वैष्णव, डॉ. टी.के. 2009, 'छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजाति महिलाएँ ( स्थिति, भूमिका एवं विकास)", आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर ।
3. अंजुबाला, 2006, '"जनजातियों की राजनीतिक संस्कृति'', युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली'।
4. कुर्रे एवं प्रधान, 2014, गरियाबंद जिले में कमार जनजाति का अध्ययन।
5. सेठी अर्चना, 2017, ''छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में कमार के आय एवं उपभोग प्रवृत्ति का अध्ययन।"

# 'परिवर्तन की बात' कहानी में व्यक्त दलित चेतना

– डॉ. संजय एल. बंधिया

हिंदी दलित साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर सूरजपाल चौहान का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के खुशवाली गांव में हुआ था। सूरजपाल चौहान बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कहानी, कविता व आत्मकथा जैसे साहित्य के माध्यम से जीवन के कटु यथार्थ को वाचा प्रदान की है। चौहानजी का दलित साहित्य हमें दलित समाज की हकीकतों और कमजोरियों से हमें रूबरू करवाता है। चौहानजी के साहित्य में समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, पाखंडवृत्ति, खोखलापन तथा दलितों के प्रति भेदभाव का हृदयस्पर्शी व मार्मिक अंकन किया गया है। अतः सूरजपाल चौहान चेतना व अस्मिता के साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने साहित्य में जातिवादी सोच एवं वर्चस्ववादी नीतियों का विद्रोह किया तथा दलितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है।

'परिवर्तन की बात' सूरजपाल चौहान के 'हैरी कब आएगा' कहानी संग्रह से ली गई है। सूरजपाल चौहान ने अपनी कहानियों में जातिवाद की समस्या का बड़ा ही यथार्थ वर्णन किया है। समाज में व्याप्त कठिनाइयों के भोगे हुए यथार्थ के वे साक्षी रहे है। अतः अपनी कहानियों के माध्यम से दलितों में व्याप्त अंधश्रद्धा, सड़ी–गली मान्यताओं को भी उकेरते हुए नजर आते है। साथ– साथ सभ्य समाज के प्रति भी लाल आंख की है। 'परिवर्तन की बात' कहानी में संघर्ष एवं मुक्ति की बात है। आलोच्य कहानी का प्रारंभ सदियों से चली आ रही वर्ण–जाति व्यवस्था से होता है। किसना (चमार) आलोच्य कहानी का प्रमुख पात्र है, जो जाति व्यवस्था और वर्चस्ववादी उत्पीड़न का शिकार है। रघु ठाकुर ठाकुर तथा हरप्रसाद दलितों के प्रति गलत एवं शोषणकारी नीति रखनेवाले पात्र है। एक दिन रघु ठाकुर के आंगन में गाय मर जाती है। खासतौर पर गांव में मृत जानवरों को उठाने का काम दलित व चमार लोग करते थे। अतः रघु ठाकुर सुबह जल्दी किसना के घर पहुंच जाते हैं। घर पहुंचते ही रघु ठाकुर किसना को देखते ही गिड़गिड़ाने लगते है–

" किसना भैया कल रात हमारी गैया मर गई।''

''कैसे मर गई ठाकुर? किसना ने आश्चर्य से पूछा।''

''कुछ पता ना चल सका, कल संध्या में तो दुहा था उसे, लगता है रात की ठंड उसे खा बैठी।।''[1]

ठाकुर की बात सुनकर किसना कहता है कि उसमें मैं क्या कर सकता हूं। किसना के 'मैं क्या कर सकता हू' शब्द सुनकर ठाकुर तिलमिला उठता है। क्रोधित हो ठाकुर कहते हैं कि करना क्या है? मृत गाय को फेंक दो और उसकी खाल उतार लो। यह शब्द मृत जानवरों के प्रति अमुक लोगों की विकलांग मानसिकता को दर्शाते हैं। वर्तमान समय में भी कभी–कभार हम देखते हैं कि मृत पशुओं के साथ बड़ा बर्बर जुल्म किया जाता है। मनुष्य की सोच पूरी तरह बदल चुकी है। ठाकुर हर प्रसाद जैसे लोग स्वार्थपूर्ति में ही अपने जीवन का परम कर्तव्य मानते हैं। तभी तो गाय के मर जाने पर वह रघु ठाकुर के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहता है –

''रघु तुम्हारी गाय मर गई मुझे बहुत दुख हुआ लेकिन एक तरह से अच्छा ही हुआ । चारा खाती थी पंसेरी और दूध बस छटांक भरा।''[2]

गाय के प्रति कहे गए यह शब्द मनुष्य की स्वार्थ मनोवृति को दर्शाते हैं। आज का मनुष्य स्वार्थ की आपाधापी में पशुओं के प्रति निर्मम बन गया है। अति विकसित सोच तथा स्वार्थवृत्ति के कारण वह निसर्ग को भी भूल गया है। आज का मनुष्य बिना स्वार्थ के श्वास लेना भी मुनासिब नहीं समझता है।

गाय की कीमत तब तक है जब तक वह दुहाने देती है। आज के मनुष्य में यह अनैतिक सोच बन रही है। प्राचीन समय में गाय को केवल प्राणी न मानकर

आराधना एवम संस्कृति का प्रतीक माना जाता था। व्यक्ति और जानवर के बीच आत्मीय संबंध बन चुके थे। वह पशुओं को अपने परिवार का एक सदस्य मानते थे। कहानीकार ने आलोच्य कहानी में यह परिवर्तनशील सोच को यथार्थ रूप से हमारे सामने रखने का बड़ा ही सटीक प्रयास किया है। गाय की आधुनिक समय में निर्थकता पर ठाकुर हरप्रसाद कहता है, जो सभ्य समाज के लिए विचारणीय है–

''यह पशु तो फालतू का बनकर रह गया है। इसकी उपयोगिता अब रही कहां? इसके बछड़े बड़े होकर बैल बनते थे। अब नई–नई तकनीक आने से खेती कामों में बैलों का महत्व भी नहीं रहा है।''[3]

इस कथन में आधुनिक युग के मनुष्य के फायदावादी दृष्टिकोण को उद्घाटित किया गया है। जानवरों के प्रति हमारी सहानुभूति कम होती जा रही है। जब पहले कोई पशु या जानवर मरता था तो हमें बड़ा ही सदमा (आघात) लगता था। लेकिन आधुनिक सोच ने समाज की पूरी विचारधारा को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया है। वस्तुतः गाय ने ठाकुरों के कुए के पास ही दम तोड़ दिया था। अतः महिलाओं के लिए पानी भरना दूभर हो गया था। महिला के मृत गाय की ओर देखकर कहे गए यह शब्द मनुष्य की स्वार्थपन की ओर इशारा करते है–"नासपीटी ने यही मरना था कहीं दूर जाकर मरती।।''[4]

उधर किसना मृत गाय के शरीर को उठाने से मना कर देता है। अतः रघु ठाकुर अपने बेटे रामसेन समेत किसना के घर लाठी लेकर पहुंच जाते हैं। रघु और रामसेन उसे जानवर की मिट्टी पार लगाने के लिए धमकाते हैं। दोनों की बातों को किसना शांत मन से निडर हो सुन रहा था। अंत में किसना कहता है–

"ठाकुर मैंने मरे जानवर उठाना बंद कर दिया है।''[5]

किसना के यह शब्द आज के दलित समाज की आधुनिक सोच को दर्शाते हैं। रघु द्वारा बार–बार प्रयास करने पर भी वह टस से मस नहीं होता है। किसना का मानना था कि उसे कौन सा काम करना है या नहीं वह उसकी मर्जी है। यहां पर ठाकुर की वर्चस्ववादी सोच देखने को मिलती है। किसना अपने पूरे समाज को इस पेशे से बाहर निकालना चाहता है। अपने समाज को एक नई दिशा देना चाहता । उनका मानना था कि समय के साथ हमारी विचारधारा में भी परिवर्तन आवश्यक है। अतः वह रघु ठाकुर से कहता है–

''ठाकुर साहब अब समय बदल रहा है। क्या आप नहीं चाहते कि समय के साथ हम भी बदले।''[6]

यहां पर किसना परिवर्तन चाहता है। वह खुलकर सड़ी–गली रूढ़ियों एवं परंपराओं का खंडन करता है। वह प्रेमचंद की 'सद्गति' कहानी का दुखी चमार नही है, जो पंडितजी के अत्याचार का विरोध न कर सके। बल्कि किसना तो आधुनिक युवाओं की विचारधारा या सोच का जीवंत प्रतीक है। वह अकेला नहीं है परंतु पूरा समाज उनकी यह परिवर्तन सोच के साथ है। अतः वह स्पष्ट शब्दों में ठाकुर को सुना देता है–

''ठाकुर मैने और मेरे मोहल्ले के सभी लोगों ने मरे जानवर उठाना बंद कर दिया है।''[7]

इन शब्दों में किसना की तेजस्वी विचारधारा बहती हुई नजर आती है। किसना और उनके मुहल्लों के लोगों ने तय कर लिया था कि जीना है तो शान से वरना मौत ही भली। तुम्हारे मरे जानवर हम नहीं उठाएंगे, जो करना है सो करो। लेकिन यह बात ठाकुर को कहां पचनेवाली थी, क्योंकि अब तक चमारों पर अन्याय व शासन ही किया गया था। आज जब लोग मृत जानवर उठाने से मना करें तब वह उसे कैसे बक्स देता। अतः वह पुलिस में किसना के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर देता है। थानेदार भी रघु ठाकुर का ही प्यादा है। थानेदार भी ठाकुर के पक्ष में ही बात रखता है। पुलिस के सामने किसना के मुंह से व्यक्त ये शब्द बड़े ही यथार्थ व प्रासंगिक लगते हैं–

"साहब क्या आप नहीं चाहते कि हम अपना यह धंधा छोड़कर कोई और धंधा करें...क्या हम सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर सकते''[8]

यहां पर दलित–पीड़ित लोगों के अस्तित्व के

संघर्ष की लड़ाई दृष्टिगत होती है। कहानी का अंत बड़ा ही विचारणीय है। जब चमारों ने गाय उठाने से मना कर दिया तो एक दिन ठाकुर ने उनके घरों के चारों तरफ कांटेदार तारों की मजबूत बाढ़ खींच दी। क्योंकि इन सभी लोगों का आने जाने का रास्ता ठाकुरों की जमीन से होकर ही गुजरता था। दलित व गरीबों में परिवर्तन यह पूंजीपति लोग नहीं चाहते हैं। उनका तो यही मानना रहता है कि गरीब सदा गरीब ही रहे। रघु ठाकुर की वर्चस्ववादी सोच का पर्दाफाश चौहानजी ने बड़े ही सटीक ढंग से आलोच्य कहानी में किया है। दलित समुदायों के बीच आई चेतना और उनका प्रतिरोध के लिए उठ खड़ा होना इसी का संकेत है, जो की कहानी के माध्यम से बड़े ही हृदयस्पर्शी ढंग से दिखाया गया है। वर्तमान समय परिवर्तन का समय है। जातिवादी सोच अब समाज में चलने वाली नहीं है। आलोच्य कहानी के माध्यम से कहानीकार ने जातिवादी सोच एवं वर्चस्ववादी विचारधारा को करारा जवाब दिया है। शिक्षा के कारण आज दलित समाज में परिवर्तन की चिंगारी प्रकट हुई है। किसना जैसे युवको के आगे आने से पूरे समाज को लाभ मिलता है। भले ही प्रारंभ में किसना जैसे युवकों को संघर्ष करना पड़े, लेकिन अंत में जीत सत्य की ही होकर रहेगी।

**- Dr. Sanjay L. Bandhiya**
Head of Department Hindi
Government Arts College, Bhesan
Dist - Junagadh Pin 362020
Mob. : 9913215452

**संदर्भ :**

(1) परिर्वतन की बात – सुरजपाल चौहान, पोषम
(2) परिर्वतन की बात – सुरजपाल चौहान, पोषम
(3) परिर्वतन की बात – सुरजपाल चौहान, पोषम
(4) परिर्वतन की बात – सुरजपाल चौहान, पोषम
(5) परिर्वतन की बात – सुरजपाल चौहान, पोषम
(6) परिर्वतन की बात – सुरजपाल चौहान, पोषम
(7) परिर्वतन की बात – सुरजपाल चौहान, पोषम
(8) परिर्वतन की बात– सुरजपाल चौहान, पोषम

# The Role and Importance of Artificial Intelligence in Information Technology : A Comprehensive Analysis

**- Dr. Harjinder Kaur**

## Abstract

AI has become a transformative force in information technology, revolutionizing businesses and user interactions. This analysis explores its applications, innovations, challenges, and future prospects in various domains such as cybersecurity, data analysis, software development, network management, and customer service. It also addresses AI ethics, ethical considerations, and challenges, emphasizing the need for responsible AI deployment. By understanding the current landscape and future potential of AI in IT, this research article provides insights for businesses, policymakers, and researchers to harness the full potential of AI and navigate the opportunities and challenges that lie ahead. The goal of this study is to discuss the role and importance of artificial intelligence in the field of information technology, and its applications that can help the IT industry build better systems with guaranteed quality.

**Keywords :** Artificial Intelligence, Information Technology, Decision-making, Innovation, Challenges.

**Introduction**

Artificial Intelligence (AI) plays a vital role in the field of Information Technology (IT) that significantly impacts various aspects of operations. It revolutionizes data processing, analysis, and utilization, enabling businesses to make informed decisions and streamline operations. AI systems, driven by sophisticated algorithms and machine learning techniques, mimic human intelligence, enhancing decision-making capabilities, improving efficiency, and enabling innovation. AI has revolutionized automation, process optimization, data analysis, predictive modeling, cybersecurity, and customer service. However, as AI becomes more pervasive, it presents challenges and ethical considerations. This research article aims to provide insights and recommendations for businesses, policymakers, and researchers to understand the transformative power of AI in IT and explore opportunities for leveraging AI to gain a competitive edge in the digital era. It will examine the evolution of AI in IT, its applications, AI-driven innovation, address challenges and ethical considerations and provide recommendations for the future of AI in IT.

**Evolution of AI in IT**

AI in IT has revolutionized technology with advancements since the late 1950s and early 1960s. The Dartmouth Workshop marked the birth of AI, while Logic Theorist, General Problem Solver, and expert systems were developed in the 1970s and 1980s. Shakey the Robot was created at Stanford Research Institute in the late 1960s and early 1970s. Machine learning techniques, including neural networks, gained popularity in speech recognition and pattern recognition in the 1990s. Deep Blue, Natural Language Processing, Data Mining, Big Data, Deep Learning, Reinforcement Learning, AI in Industry, Ethical Considerations, Transformers and Language Models, and Transformers and Language Models are just a few of the milestones and advancements made in AI in IT. AI technologies have found widespread applications in industries like healthcare, finance, e-commerce, and autonomous vehicles. Ethical considerations have led to discussions around bias, transparency, and responsible AI deployment.

**AI applications in IT**

AI has found numerous applications in the field of IT, such as

- **Automation and process optimization :** AI-powered automation tools can streamline repetitive tasks, increase efficiency, and optimize processes by analyzing patterns, identifying bottlenecks, and suggesting improvements.
- **Data analysis and predictive modeling**: AI techniques are used for data analysis and predictive modeling, enabling organizations to gain insights, make data-driven decisions, and forecast outcomes for IT-related tasks.
- **Customer service and chatbots** : AI chatbots automate customer service by utilizing NLP techniques to generate human-like responses, improve customer experience, and reduce workload, enhancing technical issues.
- **Cybersecurity and threat detection:** AI algorithms and machine learning models are essential for cybersecurity, allowing for early detection and prevention of cyber threats by analyzing network traffic patterns, anomalies, and historical data.
- **IT infrastructure management** : AI chatbots automate customer service by utilizing NLP techniques to generate human-like responses, improve customer experience, and reduce workload, enhancing technical issues.

**AI and Innovation in IT**

AI has revolutionized the way organizations operate and deliver value, unlocking new possibilities, driving efficiencies, and creating unique competitive advantages.

- **Smart Technologies and Intelligent Systems:** AI makes it possible to create intelligent systems that can analyse data, draw conclusions from it, and carry out difficult tasks.
- **Pattern recognition and machine learning :** Machine learning is an AI subset that uses data to learn patterns, predict, and detect anomalies, fraud, and demand in various domains.
- Natural Language Processing and Speech Recognition : AI enhances human-computer intera-ctions through voice commands, transcription, and search.
- **Process optimization and automation:**AI-powered automation streamlines workflows, eliminates manual tasks, improves efficiency, frees human resources, enhances accuracy, reduces errors, and effectively scales operations.
- **Making decisions based on data :** AI helps organizations make data-driven decisions by extracting insights from complex datasets using

techniques like data mining, predictive modeling, and recommendation systems.

**Challenges and Ethical Considerations**

AI and IT integration presents challenges and ethical considerations that need to be addressed.

- **Bias and Fairness :** AI systems must be fair and mitigate biases to avoid perpetuating discriminatory practices or outcomes, which can lead to discriminatory outcomes.
- Data Security and Privacy : Organizations must prioritize data privacy and security to protect individuals' rights and maintain trust in AI systems through robust measures, compliance, and ethical handling practices.
- **Job Implications and Workforce Displacement:** AI systems can lead to job displacement, so it is important to address potential job transitions, provide reskilling opportunities, and explore ways to integrate AI technologies in a way that augments human capabilities.
- **Ethical Decision-making:** Organizations must establish guidelines and ethical frameworks to govern AI decision-making processes and be transparent about the factors influencing AI outcomes.
- **Accountability and Justification:** AI systems must be transparent, accountable, and auditable to build trust and ensure responsible adoption in sensitive domains like healthcare, finance, and law.
- **Robustness and Adversarial Attacks:** AI systems must be protected against adversarial attacks and ensure robustness and reliability to prevent potential harm or misuse.
- **Inequality and its Social Impact:** AI adoption can have social impacts, so it is important to ensure that AI technologies are developed and implemented in ways that promote inclusivity, fairness, and minimize societal inequalities.

**Recommendations for AI Adoption and Implementation:**

- Organizations should define a strategy to align AI adoption with their business objectives, including areas of value, resources, and a roadmap for implementation.
- Organizations should foster a culture of experimentation, innovation, and continuous learning to empower employees to explore AI technologies.
- Organizations should invest in data collection, cleansing, and validation processes to ensure data privacy,

security, and compliance.

• Organizations should ensure fairness, transparency, and accoun-tability in AI algorithms and models, and stay up-to-date with relevant laws and regulations.

• Organizations can leverage external expertise and partnerships to accelerate AI adoption and address specific challenges.

• Organizations should invest in developing AI skills by hiring data scientists, AI specialists, and providing training programs to upskill existing employees.

• Start with small-scale pilot projects to assess the feasibility and impact of AI technologies before scaling them across the organization.

• Organizations should monitor and evaluate AI systems by tracking KPIs, collecting feedback, and iterating on models to improve accuracy and effectiveness.

• Investment in change manage-ment strategies to ensure smooth transition and user adoption of AI implemen-tation, including effective communi-cation, training, and invol-ving employees.

• Organizations should stay agile and adaptive to embrace new opportunities in AI by monitoring industry trends, attending conferences, and fostering a culture of innovation.

By implementing these suggestions, organisations may successfully manage the adoption and deployment of AI technology, maximising their advantages while addressing possible risks and problems.

**Conclusion**

AI significantly impacts information technology (IT) by transforming data processing, analysis, and decision-making. It automates repetitive operations, improves user and customer experience through Natural Language Processing (NLP), and enhances cybersecurity measures. AI also personalizes user experiences, enhancing happiness and engagement. AI supports decision-making by analyzing complex data sets, enabling businesses to make data-driven choices. Future breakthroughs, such as robots, autonomous driving, smart cities, IoT, and AR/VR, are driven by AI's boundless potential. Overall, AI will continue to influence the direction of information technology, transforming the way organizations operate and enhancing overall efficiency.

**Implications for the Future of AI in IT**

• AI will lead to more sophisticated algorithms, improved capabilities, and

improved performance.

- AI will help humans with decision-making, creative tasks, and problem-solving.
- Organizations must adapt their workflows and reskill their workforce to work with AI systems.
- AI will be used to tailor solutions to industry-specific challenges, driving innovation and transformation.
- Ethical frameworks and regulations must be developed to ensure responsible and accountable use of AI technologies.
- AI will improve user experiences through personalized recommendations, conversational interfaces, and integration with everyday devices.

Overall, artificial intelligence in IT has promise but also presents difficulties. Organisations may fully utilise AI while addressing societal and ethical problems by embracing ethical practises, investing in people and skills, and promoting an innovative culture.

**- Dr. Harjinder Kaur,**
Assistant professor,
Khalsa College of Education,
Ranjit Avenue, Amritsar (Punjab) India.
Mobile:7986204871.

**References :**


- Dirican, C. (2015). The impacts of robotics, artificial Intelligence on business, and economics.*Procedia-Social and Behavioral Sciences*, *195*, 564-573.
- Iliadis, L., Maglogiannis, I., & Papadopoulos, H. (2012). Artificial intelligence applications and innovations. Berlin: *Springer.*
- Issa, T., & Isaias, P. (2015). Artificial intelligence technologies and the evolution of Web 3.0. Preface. Hershey, PA: IGI Global.
- Makridakis, S. (2017). The forthcoming Artificial Intelligence (AI) revolution: Its impact on on society and firms.*Futures ELSVIER, 90*,46-60
- https://bernardmarr.com/the-evolution-of-ai-transforming-the-world-one-algorithm-at atime/#:~:text=The%20journey%20of% 20AI%20started,%2C% 20LISP%2C%20by%20John %20McCarthy.
- https://blogs.cdc.gov/niosh-science-blog/2019/08/26/ai/
- https://builtin.com/artificialintelligence/artificial-intelligence-future
- https://softengi.com/blog/ai-in-it-how-artificial-intelligence-will-transform-the-it-industry/
- https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/shikshacoach/how-ai-will-impact-the-futureof-work-and-life-49577/
- https://www.simplilearn.com/tutorials/artificial-intelligence-tutorial/artificial-intelligence applications
- https://www.springboard.com/blog/data-science/artificial-intelligence-future/

# INCLUSIVE SPORTS FOR PERSONS WITH DISABILITIES : MYTH OR REALITY

- Dr. Mona Goel
- Charu Chadha

There is no single universally accepted definition of the term 'sport'. Defining the term has proved as difficult as excelling in particular sport but, the term has over the years acquired various definitions-some restrictive, some wide and some illustrative. The term 'sport' derives its origin from a french determined middle english verb '*sporten'* literally meaning 'to divert' and also the latin term '*desport'* which means to carry away. Basically, sport like religion defies definition. In a manner it goes beyond terminology. Neither it can be identified, nor does it have a substance.[1] Sports have always captured the human heart and it can be affirmatively stated that mankind has indulged in sports activities from its earliest days.[2] In ancient India, sports signified a way of realizing the potential of the body to the fullest. The synonym of the sports was '*Dehvada'* defined as 'one of the ways to full realization.'[3]

The importance of sports can be chalked out of the words of U.N. Secretary General, Banki Moon, as he said "Sports is a language every one of us can speak". It is more about inclusion and participation.[4] Sports can change a disabled person more profoundly, empowering him to advocate for the changes in society. Through sports, PwDs acquire vital social skills; develop independence, communication skills and significance of teamwork.[5]

Sports have huge impact on human rights and it is the best ambassador to promote human rights. Human rights are the rights that belong justifiably to every person without any discrimination.[6] Sports touch upon many human rights aspects and international conventions concerning human rights. Moreover, it also contributes in achieving the Millennium Development Goals (MDGs). For example: Sports based opportunities can help achieve the goal of universal primary education (MDG2) by reducing stigma preventing children with disabilities from attending school; Promote gender equality (MDG3) by empowering women and girls with disabilities to gain health education, skills, social networks and leadership experience to

lead increased employment and lower the levels of extreme poverty and hunger (MDG1) by helping reduce stigma and increase self confidence. The U.N. convention on Rights of PwDs is the first legally binding international instrument to address the rights of persons with disabilities and inclusive sports. Art.30 of the convention addresses both the mainstream and disability specific sports. This also requires children with disabilities be included in physical education within the school system "to the fullest extent possible."[7] There are several other documents for promoting human rights such as: The Olympic Charter, 1908, UNESCO International Charter of Physical Education, Physical Activity and Sport, The U.N. Office on Sports for Development and Peace, Centre of sports and Human Rights etc.

The right participate in sports is not explicitly reflected in U.D.H.R., The International Covenant on Civil and Political Rights and International Covenant on Economic, Social and Cultural Rights, although it is considered under the right to health. Art.13(c) of CEDAW recognizes the right to participate in recreational activities, Sports and all aspects of cultural life. Art.30 (5) of the CRPD made advances in this direction, specifying the key factors regarding the enjoyment of the right by persons with disabilities.[8] The power of sports, as a transformative tool is of particular importance to women as women with disabilities experience double discrimination on the basis of gender and disability. It is reported that 93% of women with disabilities are not involved in sports and they comprise only 1/3$^{rd}$ of athletes with disabilities in international competitions. By providing an opportunity to women with disabilities to compete and demonstrate their physical strength and ability and in a way that helps to reduce gender stereotypes and negative perceptions associated to women with disabilities.[9]

Further, many international organizations have addressed the right of Persons with Disabilities to engage in physical activity and sports. The UNESCO International Charter of Physical Education Activity and sport revised in 2015,stresses that practicing "physical education, physical activity and sport is a fundamental right for all" without discrimination, and also highlights the need for "inclusive, adapted and safe opportunities to

participate in those activities for PwDs." In order to implement the Charter, member states adopted Kazan Action Plan. In addition, WHO has issued recommendations on sports and physical activities for PwDs.[10]

According to the 1992 World Programme of Action concerning disabled person, "Equalisation of Opportunities means the process through which general system of society, such as physical and cultural environment, housing and transportation, social and health services, educational and work opportunities, cultural and social life including recreational and sports facilities are made accessible to all." Creating environment with equal opportunities increases the possibilities of PwDs to participate in the civic and cultural life of their countries and facilitate the process. Disabled athletes who are able to compete with non disabled athletes are obvious examples of positive results of implementing 30(5) (a) of the convention. Stating the rights of PwDs in the mainstream sports activities where they have opportunities to compete with people without disabilities. Equality does not mean right to violate the rules however.

The 'equality' concept for participating in mainstream sport and rights of an athlete with disability to compete in mainstream elite competition came squarely before the international sporting community in *Oscar Pistorious v.IAAF*. In this case, the governing body IAAF banned pistorious from competing in 2008 olympics on the grounds that the prosthetic legs constituted an illegal device and provided him with " a demonstrable mechanism and competitive advantage compared with someone not using the blade" in violation of IAAF competition rules. Against which he appealed to the Court of Arbitration for Sport, according to which the scientific evidence did not prove that the prosthetics provided him with either metabolic or biomechanics advantage. Thus, the penal decided in favour of him providing that he could compete with others on equal basis if the equipment does not provide him with unfair advantage over other athletes.[11]

In Para Olympic sports, athletes

often depend upon some form of equipment to enable the activities of daily living, including the ability to participate in sports. Determining precisely when technology assists sports performance and when it transforms or distorts them presents a philosophical and ethical dilemma.[12] The evolution of technology to enhance the performance of sport was long overdue for Pwds. The challenge for the future sports medicine and science research is to effectively 'match' the technology with the athlete and to ensure that it does so in a manner that preserves the integrity of sports contests and does so in a way that is accessible to all the athletes at that level of competition.[13]

No doubt, the right of participation, access to sports, indulgence in social activities, and right of reasonable accommodation have improved the overall status of Pwds towards inclusive sports but on the other hand, organizing Paralympics, Special Olympics and other sports events for Pwds give rise to a question: whether inclusion in society is for real? Whether these special sports events for Pwds contribute to "Inclusive Sprots"? The answer is definitely a 'No'. Making all athletes compete in single games would be the ultimate test of the 'taking part' ideal. Thus, unifying sports activities with other paralympic games would improve the level of games and help in including them in the mainstream and providing equal opportunities like other able bodied persons.[14]

**Conclusion**

There are several adaptive measures taken to include PwDs in sports,which was earlier considered as a relation between north and the south pole, somehow it started but, at the same time, They are segregated from the mainstream events which are really necessary for recognition at national and international levels. Hence such a scenario raises questions on present inclusion spectrum and framework of inclusive sports in society so that Pwds are provided fair opportunity of representation. Secondly, the theoretical or legislative changes will not work until it is implemented properly, for which a better infrastructure keeping in mind the needs and an inclusive and positive atmosphere by the society is created for Persons with Disabilities.

**- Dr. Mona Goel**
Assistant Professor
Department of Laws
Gurunanak Dev University,
Regional Campus, Jalandhar (PB)

**- Charu Chadha**
Research Scholar
Department of Laws
Gurunanak Dev University,
Regional Campus, Jalandhar (PB)
Mob. 8360898550

**References :**

*Assistant Professor, Department of Laws, Guru Nanak Dev University, Regional Campus, Jalandhar.

** Research Scholar, Department of Laws, Guru Nanak Dev University, Regional Campus , Jalandhar.

1. Mukul Mudgal and Vidushpad Singhania, *Law and Sports in India- Developments, Issues and Challenges,* p.01, (Lexis Nexis, Gurgaon, Haryana, Second Edition,2016)

2. *Id.* p.06

3. *Supra* note 1.

4. *Id.* p. 26.

5. Retrieved from https://www.un.org/development/desa/disabilities/issues/disability-and-sports.html (Last visited on June, 20, 2023)

6. Harshit Bhimrajka, RGNUL, Patiala, *International Human Rights in Sports, available at* https://blog.ipleaders.in//international-human-rights-sports/#:~:text=Human%20rights%20are%20the%20rights,to%20participation%2C%20right%20to%20education (Last visited on June, 20, 2023)

7. *Supra* note 5.

8. UN, General Assembly, Human Rights Council, *Report on Participation in physical Activity and sport under article 30 of convention on rights of persons with disabilities* (2021 p.05), **A**/HRC/46/49 (Last Visited on ( June, 23, 2023)

*9.* *Supra* note 5.

10. UN, General Assembly, Human Rights Council, *Report on Participation in physical Activity and sport under article 30 of convention on rights of persons with disabilities* (2021 pp.04-05), **A**/HRC /46/49 (Last Visited on (June, 23, 2023)

*11.* Maureen A. Weston, "The International Right to Sport for People with Disabilities," 28 *Marquette Sports Law Review,* pp. 30-32 (2017)

12. Brendan Burkett, Mike McNamee &Wolfgang Potthast (2011): Shifting boundaries in sports Technology and Disability: equal rights or unfair advantage in the case of oskar Pisorious?, Disability & Society, 26:5,p.643, *available at* https://dx.doi.org/10.1080/09687599.2011.589197 (Last visited on June,24,2023)

13. *Id.*p.652

14. Maureen A. Weston, "The International Right to Sport for People with Disabilities," 28 *Marquette Sports Law Review,* p.34 (2017)

# Ensuring Values for Coexistential Living : Issues and Challenges

- Dr. Shyam Sundar
- Dr. Saroj Malik

**ABSTRACT**

Coexistential living requires both quantitative and qualitative aspects, with the physical aspect being essential for the body's needs and the qualitative aspects like confidence, truth, honesty, and love for perfect living. Values play a crucial role in guiding individuals, families, society, and nature. Various civilisations have developed values based on religion, spirituality, morality, or ethics. Exploring universal or existential values can guide global citizens in creating a peaceful environment for all, promoting harmony and maintaining interpersonal relationships with nature. Understanding universal humanistic values is vital for living sustainably and discussing challenges in the present global society.

**KEYWORDS :** Values, Sustainable Living, Co-Existence, Issues and Challenges.

**Introduction:**

Various human civilisations on this planet have their own value systems accepted by their citizens to be in a harmonious state to move forward in civil society. Human values and ethics systems always remain universalised, which leads to the development of society and the individual personality of any human being. Without value, no one can be uplifted in their life. The great thinker and philosopher A. Nagraj (1999) has the universal perspective of human values that existence is co-existence, which is inseparable, and that mere acceptance of existence as a desirable goal is not enough. Continuity of existence may not be completed without co-existence. We mustanalyse and understand the meaning of this goal in terms of its operational and behavioural implications. Therefore, understanding human values in terms of coexistence may play an essential role in developing one's personality and harmonious & sustainable living with every unit of this existence.

The National Education Policy2020 highlights the importance of values in a society's social structure. In Germany and Britain, the study of the Indian knowledge system based on Sanskrit literature is being conducted. This approach is seen as relevant and accurate, as Muslim rulers have

destroyed the glory of Indian universities. The policy aims to revive the Indian knowledge system and address the current problems faced by societies worldwide. By incorporating this knowledge system, the policy seeks to promote a more inclusive and democratic society.

**Concept of Values for Coexistential Living :** We move towards a global society due to the impact of various factors such as industrialisation, globalisation, technological advancement, and education. They need justice, freedom, equality, and the right to grow up to their full potential without any barriers such as language, caste, sex, religion, regionalism, etc. The coming open-minded generation wantsglobal peace, justice, equality, and freedom.

**Universal Values Based on Co-existence Philosophy :** A.Nagraj (1999) propounded co-existential philosophy, which has explored the reality of this existence and described it logically. This is also called a human-centric ideology. According to the whole existence, reality has its value in maintaining order.

**Issues in present global society:** There are various issues in international society, Some of the problems are under

**Global Citizen Mindset :** Due to the rapid increase in the technology-based use of information communication technology, the mindset of the world's citizens has become global; physical distances do not matter when connected with international society.The online system of Connect has approved this globalmindset.

**Natural Resources :** Human beings are exploiting natural resources for their short-term gains, due to which the biological imbalances are reflected in various types of pollution, problems and ultimately,global warming alarms.

**Global politics** has become globalised on various issues, influencing all matters. Any news/ information goes viral through the internet and media. Governments are also affected by these global issues and politics.

**Terrorism :** Due to various reasons, some ethnic groups are involved in spreading and supporting terror due to unequal distribution of resources and monopolised exchange of proprietary items.

**Challenges in the present education system :**

People observe a decline in the value system in our society, and due to this, we face various problems in family, society, and

nature. We are blaming multiple institutions for the decline in traditional values. Sometimes, we blame political institutions, educational institutions, or the media. But we need to think critically about this issue in emerging situations universally. There are various fact

## 1. Classroom Environment :

Present classrooms are complex due to various belief systems and lifestyles in society, which can either support or hinder progress. Globalisation, media, and job opportunities are transforming society into a global one. To prepare the new generation for this new social system, educating them with universal values in the classroom is crucial, preparing them to accept all existence. This requires a shift from relying on families to impart such values.

## 2. Transactional Methodology :

Traditional teaching pedagogy is also a big challenge for teaching universal values. We need to practice the critical and logical way of teaching. Traditional teaching methods are not competent enough to develop the universal mindset among the future generation. We need to discuss the universal values with the learner in the context of global society and the need for a global market.

## 3. Sustainable Environment :

The global environment is facing a value crisis, with a focus on surviving in a competitive environment. This challenges universally accepting values, as our developmental meaning should encompass physical and non-physical aspects. To ensure a global society, creating an environment that promotes the practice of universally acceptable values in educational institutions is essential.

## 4. Cultural Diversity :

The students from diverse cultures have been observed with their own values, precedence, and practices in their social lives. Different societal groups have different languages, culture, value systems, and ways of living. Due to these differences, they are not supportive and cooperative in their social activities. This mindset creates a barrier to developing universal values among the learners.

## 5. Coordination in institutions:

Indian traditional families have evolved into nuclear family systems due to migration and individual goals. This shift has limited opportunities for children to learn and practice values, leading to irresponsibility and indiscipline. Education

is crucial in teaching skills and values based on future society's needs. Both quantitative and qualitative aspects are essential for a harmonious and sustainable life. Quantitative aspects are crucial to the body, while qualitative aspects focus on the individual's needs and experiences.

## 6. Parental aspirations and expectations:

Parental expectations and mindsets have stifled spontaneous values and nurturing in children, leading to anxiety and frustration. These expectations have skewed the value system, replacing cohabitation and family values discussions with resources to meet aspirations. Race is the primary concern, and learners face obstacles, causing frustration in the current educational system.As a result, a parent's perspective might hinder a child's growth. Thus, this kind of difficulty must be addressed in the classroom for students to operate in a universally acceptable way and capable of handling the circumstances in a global society.

## Conclusion:

The education system plays a crucial role in teaching universal values to human beings, fostering a global society where everyone is accepted as equal. This system, rooted in the rich Indian traditional system, emphasises values like brotherhood, cooperation, love, truth, non-violence, harmony, and unity. However, rapid changes in society, globalisation, social media, markets, and education have led to a decline in these values, causing problems in families, society, and nature. The education system's responsibility is to create global citizens who accept and respect all, fostering a harmonious and sustainable global society where all human beings can achieve the goal of happiness.

Indian traditional systems, rich in religious beliefs, guide human activities and promote sustainable living. Key values include brotherhood, cooperation, love, truth, non-violence, harmony, and unity. However, rapid changes in society, globalisation, media, markets, and education have led to a decline in global values systems. This has resulted in problems in families, society, and nature. The education system must deliver universal values to the young generation, fostering a global citizen mindset that accepts everyone as equal human beings for sustainable living. By understanding our relations and roles, we can create a sustainable society where all activities can be enjoyed sustainably.

**- Dr. Shyam Sunder**
Assistant Professor (EPRAI)
DIET Daryaganj, New Delhi-2
Mob. 9013360202

**- Dr. Saroj Malik**
Assistant Professor **(C&P)**
DIET Keshavpuram New Delhi-35

**References :**

1. A. Nagraj, (1998). Jivana Vidya Ek Parichaya, Jivana Vidya Prakashan Amarkantak (M.P)
2. Som Tyagi,(2015). Lectures of 7 days workshops: DVDs of Abhyudaya Sansthan Raipur (C.G)
3. NEP(2020) Ministry of Education Govt. of India, New Delhi
4. NCERT(2014). Basics in Education, NCERT, New Delhi
5. NCERT(2006). National Curriculum Framework, 2005 NCERT, New Delhi
6. A. Nagraj (1999).Maanva Vyavhaar Darshan, Jivana Vidya Prakashan Amarkantak(M.P.)
7. Amar KumarChaudhary (2013). Value Education: The Need of the Nation April 8-14, University News, A.I.U. New Delhi
8. V. Balakrishnan (2013). Value Oriented Higher Education: Issue of concern, University News, A.I.U. New Delhi
9. RRGaur, Sangal,Bagaria(2010). A Foundation course in human Values and Professional Ethics, Excel Books Pvt. Limited New Delhi-110049
10. Sanjeev Verma (2008),MARCH-10-16, Inclusion of Ethics and Social Responsibility in Curriculum: Essence of time,University News, A.I.U.,New Delhi.

# ग़ज़ल

वोह मुझपे इस तरह से ही इनायत करते हैं
ग़ैर से मेरा गिला मेरी शिकायत करते हैं

चाह तो थी कैद मुट्ठी में हवा को कर ही लें
अज़्म देखो तुम हमारा, क्या हिमाकत करते हैं

लोग तो इक जाम क्या, सागर तलक पी जाते हैं
एक हम हैं चन्द कतरों पे कनाअत करते हैं

गैर भर भर झोलियाँ, गुल तक लुटाते रहते हैं
ना समझ हम तल्ख़ खारों, की हिफाजत करते हैं

जिन्दगी औ मौत पर है, अख्तियारी बस उसकी
खूँ बहा कातिल अमानत में ख़नानत करते हैं

खेल तो जुल्मों सितम के खूब खेले हैं तुमने
आज तुमसे सिर्फ उम्मीदें शराफत करते हैं

वक्त फुरक़त का कभी 'खुर्शीद' सह सकते हैं क्या
हर घड़ी रब से बचाने की इबादत करते हैं।

— ख़ुर्शीद शेख 'ख़ुर्शीद'
संस्थापक एवं प्रधान सम्पादक
अदबीउड़ान
1 च–16, सेक्टर–4, हिरण मगरी
उदयपुर–313002 (राज.)
मोबा. 09950678815

# फूले समाज की पत्र–पत्रिका एवं स्मारिकाएँ

– डॉ. रूपचंद गौतम

अंग्रेजों से पहले देश पूर्ण रूप से कृषि पर निर्भर था। अंग्रेजों के आने पर इसके स्वरूप पर व्यापार का भी प्रभाव पड़ा। मजदूरों को उनकी सुविधा के अनुसार अवकाश दे दिया जाता था पर साप्ताहिक अवकाश का चलन नहीं था। ईसाई अधिकारी रविवार को चर्च में प्रार्थना के लिए जाते थे। प्रार्थना के लिए जाने व आने में इतना समय लग जाता था कि आधा दिन बीत जाता था पर मजदूरों को लगातार काम करने के कारण उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता था। केन्हेरसर के रहने वाले नारायण मेधावी लोखंडे ने मैट्रिक परीक्षा पास करके रेलवे के डाक विभाग में सेवा करनी प्रारंभ की। सरकारी सेवा से संतुष्टि न मिलने के कारण लोखंडे जी ने बॉम्बे टेक्सटाइल मिल में स्टोरकीपर के रूप में अपनी सेवा देने लगे। ये एक चिंतन प्रवृति के होने के कारण यही सोचते थे कि सप्ताह में एक दिन तो अवकाश जरूर मिलना चाहिए। जिससे शरीर को आराम मिल सके। उस समय अपनी सोच को सरकार तक पहुँचाना आसान नहीं था। उन्होंने अपनी बात को सरकार तक पहुँचाने के लिए वर्ष 1880 में दीनबन्धु नाम से अखबार प्रारंभ किया। उस समय उनके पास यही एकमात्र साधन था, सरकार तक अपनी बात पहुँचाने का। अखबार का उद्देश्य 'केवल मिल मालिकों की कारगुजारी उजागर करना और श्रमिकों की परेशानी बयाँ करना था। लोखंडे इस अखबार में मजदूरों की दयनीय स्थिति के बारे में लिखते थे। यहीं से पिछड़े वर्ग की पत्रकारिता का उदय हुआ।

वर्ष 1884 में बॉम्बे हैंडस एसोसिएशन के नाम से देश में पहली बार ट्रेड यूनियन की स्थापना की गई। लोखंडे ही इस यूनियन के अध्यक्ष बने। इस यूनियन के माध्यम से 1881 में कारखाना अधिनियम में बदलाव करने की बात रखी। सरकार ने इनकी मांग को खारिज कर दिया पर लोखंडे ने हार नहीं मानी। इसके बाद उन्होंने मजदूरों के लिए रविवार के अवकाश की मांग को उठाया। इसके साथ–साथ मोजन करने के लिए छुट्टी, काम के घंटे निश्चित करने का प्रस्ताव, काम के समय किसी तरह की दुर्घटना हो जाने की स्थिति में कामगार को सवेतन छुट्टी और दुर्घटना के कारण किसी की मृत्यु हो जाने की स्थिति में उसके आश्रितों को पेंशन जैसी मांगों को लेकर याचिका तैयार की, जिस पर 5500 श्रमिकों ने हस्ताक्षर किए। जैसे ही याचिका फैक्ट्री कमीशनर के सामने पहुँची, मिल मालिकों ने विरोध शुरू कर दिया।[1] लोखंडे ने समूचे देश में आंदोलन प्रारंभ कर दिया। 1890 में बॉम्बे के रेसकोर्स मैदान में दस हजार मजदूरों ने लोखंडे को अपना समर्थन दिया। इस आंदोलन से सूरत, अहमदाबाद, शोलापुर, नागपुर की कई फैक्ट्रियों पर ताले पड़ गये। आखिरकार सरकार श्रमिकों के आंदोलन के सामने झुकी। इसके बाद फैक्ट्री श्रम आयोग का गठन हुआ। इसके बाद मजदूरों को दोपहर के भोजन करने के लिए अवकाश मिलने लगा। काम के घंटे तय हो गये पर साप्ताहिक अवकाश नहीं मिल सका। इसी वर्ष लोखंडे ने पुनः आंदोलन किया जिसमें महिला कर्मचारियों की संख्या अधिक थी। 10 जून 1890 को रविवार के दिन भारत को अपना पहला साप्ताहिक अवकाश मिला।[2] इस तरह से कहा जा सकता है कि पिछड़े वर्ग की पत्रकारिता के जनक ही नहीं बल्कि ट्रेड यूनियन की स्थापना एवं रविवार की छुट्टी दिलाने वाले लोखंडे देश के पहले व्यक्ति थे। ज्योतिराव फुले ने भी कुछ दिन लोखंडे के दीनबन्धु अखबार का संपादन किया। इसके बाद ज्योतिराव फुले द्वारा **शिक्षा इशारा** नाम से मासिक समाचार पत्र प्रकाशित करके पिछड़े वर्ग की पत्रकारिता का उद्‌गम हुआ।

फुले के पत्रकारिता विचार को आगे बढ़ाते हुए मराठी भाषा में कई पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हुई। डॉ. अम्बेडकर ने भी उन्हीं के विचार को गति देने के लिए **मूकनायक** प्रकाशित किया था। श्रीकृष्ण बंसल के संपादन में **वृहद विकास** अमरावती, निदेश्वर माली के संपादन में **खलेरी गौरव** सुरेश कुमार माली के संपादन में **इंडिया मित्र** धनंजय माली के संपादन में **माली दर्शन** अशोक मानेकर के संपादन में **बाल विकास**

संजय मैथ्यु के संपादन में **समाज जागरण** मनोहर चालपै के संपादन में **माली विचार** नागपुर, श्रीमती असकु मोरे के संपादन में **फुले ज्योति** विदर्भ, सुरेन्द्र माली के संपादन में **माली दर्पण** चंद्रकांत बघेल के संपादन में **माली भूषण** विजय कुमार माली के संपादन में **माली आवाज** पुणे, दशरथ सदाशिव फुले के संपादन में **महामित्र** सतारा से पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होनी प्रारंभ हुई। इनका असर हिन्दी भाषी राज्यों पर पड़ा।

वर्ष 1992 में हेमलता सेनिया के संपादन में **गूँगों की चीखें** साप्ताहिक अखबार, रामनारायण ने भोपाल से मई 2001 में **महात्मा फुले दर्शन**, सौरभ संत पटेल के संपादन में **क्रांति दूत**, सत्यनारायण कछावा ने उज्जैन से वर्ष 2002 में **माली मंथन**, इसी वर्ष गजानंद रामी ने उज्जैन से **वनमाली** नरेन्द्र **पुष्पद वाणी** संतोष पुष्पद के संपादन में **लोकहित की पुकार** प्रदीप कुशवाह के संपादन में **समता संदेश**, सोनू गेहलोत के संपादन में **माली दर्पण,** धीरज सैनी के संपादन में **माली मधुवन** उज्जैन, राजेन्द्र सिंह कुशवाह के संपादन में **कुश प्रकाश** ग्वालियर, प्रभु कुशवाह के संपादन में **कुश जागृति** सागर, राकेश वर्मा के संपादन में **कुश दर्पण** धार, जगदीश कुशवाह के संपादन में **कुशवाह समाज**, अशोक वर्मा के संपादन में **माली लगन,** हुकुमचंद जाधव के संपादन में **श्याममाना** इन्दौर, प्रवीण चौधरी के संपादन में **कृषि मित्र**, टीकाराम पटेल के संपादन में **पिछड़ा वर्ग समाचार**, राजेश पटेल के संपादन में **हरदिया ब्रादरी** जबलपुर, मांगेलाल पत्रकार के संपादन में **कुश शक्ति** माली जाति के साहित्य व संस्कृति के सवालों को बखूबी से उठाया।

हेमराज सैनी के संपादन में जयपुर से वर्ष 2003 में मासिक अखबार **माली लहर**, अश्वनी कुमार के संपादन में **सैनी संदेश**, घनश्याम सैनी के संपादन में **सैनी लहर**, शिवचरण माली के संपादन में **लोक दशा**, गोपीकिशन गेहलोत के संपादन में **सैनी माली कॉम** जयपुर, से प्रकाशित हुई। मोतीलाल फुले के संपादन में **महात्मा फुले जागृति,** वनबारी लाल सोलंकी के संपादन में **जगत मुरार पत्रिका** जालोर, जुगल किशोर गेहलोत के संपादन में **उद्घोष** नयावर, सुन्दरलाल माली के संपादन में **सैनी दर्पण** नयावर, महावीर सिंह चौहान के संपादन में **मोगरा** अजमेर, राजकुमार माली के संपादन में **समाज की हलचल** गोपाल लाल माली ने भीलवाड़ा से वर्ष 2009 में **फुले विचार वाटिका**, मनीष गेहलोत के संपादन में **माली सैनी संदेश** जोधपुर, सुमित्रा आर्य सेन के संपादन में **कलाम काला** वीरेन्द्र मंगल भाटी **सैनी सेतु टाइम्स** जगदीश यायावर सैनी के संपादन में **सैनी घोष** योगेश सैनी के संपादन में **माली जगत** अलवर, धनराज माली के संपादन में **माली दर्पण** विरोही, देवराज सैनी के संपादन में **राष्ट्रीय सैनी पंचायत** नागोर से पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हुई।

झज्जर हरियाणा से मंजू सैनी के संपादन में **गोल्डन भारत** किरन सैनी के संपादन में रोहतक से **राष्ट्रीय सैनी पंचायत**, करन सिंह सैनी के संपादन में गुरुगाँव से **राज संघर्ष**, हेमन्त सैनी के संपादन में **फुले संदेश** पत्रिकाएं प्रकाशित हुई। पत्रिकाओं के माध्यम से फुले के विचार हरियाणा की जमींन पर अवतरित होने प्रारंभ हुए। मनोज काम्बोज ने सहारनपुर उत्तर प्रदेश से **काम्बोज सैनी जागृति पत्रिका**, हेमन्त सैनी ने रेवाड़ी हरियाणा से वर्ष 2012 में **फुले विचार वाटिका,** रामनारायण ने गाजीपुर दिल्ली से वर्ष 2014 में **शिक्षा इशारा** तथा स्वरूप नगर दिल्ली से **बदलाव की दुनिया पत्रिका** प्रकाशित की। पत्र–पत्रिकाओं एवं स्मारिकाओं के शीर्षक फुले/सैनी/माली शब्दों से प्रारंभ होते दिखाई देते हैं। माली/कुशवाहा/मौर्य/सैनी आदि के बीच फुले शब्द की चेतना का प्रतीक के रूप में उभरा है।

**– डॉ. रूपचन्द गौतम**
228/9, मंडोली, दिल्ली–93
मोबा. 9868414275

**संदर्भ :**

1. महात्मा फुले दर्शन, दिसम्बर 2020, पृ.–15
2. वही।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

विकास के अमृत काल में संवैधानिक मूल्यों के साथ

## रामराज्य की ओर बढ़ता मध्यप्रदेश

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा | सशक्त और आत्मनिर्भर नारी शक्ति | अंत्योदय उत्थान
समृद्ध होता अन्नदाता | सक्षम युवा | सुलभ और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं | सांस्कृतिक समृद्धि

## 75 वें गणतंत्र दिवस
## की प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं...

"आइये, हम सब मिलकर मध्यप्रदेश को एक ऐसे गणतंत्र के रूप में लेकर आगे बढ़ें, जो सुराज, सुशासन सम्मत कार्यशैली और रामराज्य के आदर्शों का द्योतक हो, जिसमें सबका हित - सबका मंगल समाहित हो। शुभकामनाएं।"

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

D18508/23

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

मध्यप्रदेश शासन

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2024

भारत की पहली महिला शिक्षिका

# क्रांति ज्योति सावित्री बाई फुले

की जयंती के अवसर (03 जनवरी) पर

## शत् शत् नमन।

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स , 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार